Dr. DHANVIR PRASAD

ASSISTANT PROFESSOR (G. T)

C.M.J COLLEGE DONWARIHAT KHUTAUNA MADHUBANI

DEPT OF PSYCHOLOGY

L.N.M.U DARBHANGA

ADLER 'S THEORY OF DREAM

अल्फ्रेड एडलर फ्रायड के सहयोगी एवं समर्थक थे। युंग की तरह एडलर को भी फ्रायड से सैद्धांतिक मतभेद हो गया। इस मतभेद के कारण एडलर ने अपनी पृथक् विचारधारा का प्रतिपादन किया और 1912 ई0 में वैयक्तिक मनोविज्ञान की स्थापना की ।

फ्रायड ने जहाँ काम इच्छा को स्वप्न का मौलिक बिषय माना वहाँ युंग ने जीने की इच्छा को इसका कारण माना है। एडलर के अनुसार स्वप्न का प्रमुख आधार व्यक्ति में आधिपत्य प्राप्ति की भावना है। इस प्रकार इन्होंने इगो की संतुष्टि पर विशेष महत्व दिया है। एडलर

ने भी स्वप्न के लिए मानसिक संधर्ष, अचेतन तथा दमन को अनिवार्य माना ।इनके शब्दों में –

"Dream is an attempted solution of some problems arising from a conflict between life's two basic principles-superiority feeling and inferiority feelling."

अर्थात स्वप्न में उन समस्याओं के समाधान का प्रयास होता है जो जीवन के दो मौलिक भावों- श्रेष्ठ भाव तथा हीन भाव के संधर्ष के कारण उत्पन्न होती है। इससे स्पष्ट होता है कि हम सदा श्रेष्ठ बनने का प्रयास करते हैं किन्तु असफल हो जाने के कारण धोर निराशा का सामना करना पड़ता है। जिसके फलस्वरूप हीन भाव पैदा होता है। स्वप्न के द्वारा इसी श्रेष्ठ भाव तथा हीन भाव के बीच संघर्षों का समाधान होता है। एडलर ने बतलाया कि प्रत्येक व्यक्ति की अपनी जीवन शैली होती है जो बिशेष ढंग की होती है। इस जीवन शैली का उदय एवं विकास प्रारम्भिक बाल्यावस्था में ही हो जाता है। इसी अवस्था को सम्पूर्ण पारिवारिक परिस्थिति व्यक्ति को

जीवन के प्रति एक विशेष प्रकार के दृष्टिकोण अपनाने को प्रेरित करती है।

जीवन के प्रति व्यक्ति के इसी विशेष दृष्टिकोण को एडलर ने जीवन शैली की संज्ञा दी है। प्रत्येक व्यक्ति की जीवन शैली अलग-अलग होती है। प्रारम्भ में बच्चा माँ के संम्पर्क में अधिक रहता है। अतः माँ का प्रभाव इनके विकास पर अधिक पडता है। एडलर ने अपनी पुस्तक-

"What life should mean to you " में लिखा है-

Dreams are an attempt to make a bridge between an individual'a style of life and his present problem without making any new demands of the style of life "

इसका अर्थ हुआ कि स्वप्न व्यक्ति की जीवन शैली और उसकी वर्तमान समस्याओं के वीच बिना किसी नयी जीवन शैली की मांग किये हुए सेतु बनाने का प्रयास है ।

जैसा कि हम जानते हैं फ्रायड ने स्वप्न का सम्बन्ध पूर्वानुभूति से स्थापित किया है। वहाँ एडलर ने इसका संबंध वर्तमान एवं भविष्य से भी बतलाया है ।

निष्कर्ष के रूप में कहा जा सकता है कि एडलर ने अपने सिद्धांत में आधिपत्य की भावना को स्वप्न का मूल बिषय माना है तथा उन्होंने स्वप्न को श्रेष्ठता तथा हीनता के भावों के बीच संघर्षों के समाधान का प्रयास कहा है जिसमें व्यक्ति की जीवन शैली प्रकट होती है। इस प्रकार इनके अनुसार स्वप्न का सम्बन्ध न केवल अतीत की धटना से है बल्कि इससे वर्तमान की समस्याएं तथा भविष्य की धटनाओं का पूर्वाभास होता है ।

उपर्युक्त विवेचन के आधार पर यह कहा जा सकता है कि स्वप्न की धारणा जिस प्रकार प्राचीन काल में अंधविश्वासों से प्रभावित था आज भी इसके ठोस एवं

वैज्ञानिक स्वरूप हमारे समक्ष नहीं है। क्योंकि मनोवैज्ञानिकों के बीच स्वप्न के मूलभूत बिषय को लेकर ही अभीतक विवाद एवं विरोध चल रहा है। फिर भी इन सिद्धांतों में कुछ बिन्दुओं पर मनोवैज्ञानिकों में मतैक्य है जिसके आधार पर मानसिक रोगियों की स्वप्न व्याख्या करने का प्रयास किया जाता है ।